शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १९ : अंक १ : नई दिल्ली : ७-१३ अप्रेल २०१३

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ३७ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी आदि श्रमणी ४१, सर्व ७८ भुज (गुजरात) पधार गए हैं। यहां पूज्यप्रवर पांच दिन प्रवास करेंगे। भुज पधारने के साथ ही गुजरात यात्रा की निर्धारित एक मंजिल प्राप्त हो गई। यहां से पूज्यप्रवर गांधीधाम होते हुए रापर पधारेंगे। वहां २३ अप्रेल को महावीर जयंती का समायोजन होगा। तत्पश्चात अक्षयतृतीया हेतु वाव की ओर विहार करेंगे। २२ मई को पूज्यप्रवर गुजरात यात्रा संपन्न कर राजस्थान की सीमा में प्रवेश करेंगे।

'आणं सरणं गच्छामि' विषय पर पूज्यप्रवर का पावन संबोध

आर्हत् वाङ्मय में कहा गया है--**आणाए मामगं धम्मं।** आज का निर्धारित प्रवचन विषय है--**'आणं सरणं गच्छामि।'** मैं आज्ञा की शरण में जा रहा हूं। अर्हतों, सिद्धों, साधुओं और केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण तो प्रसिद्ध है, परन्तु मर्यादा पत्र में एक अन्य शरण सूत्र रूप में प्राप्त होता है--आणं सरणं गच्छामि। मैं आज्ञा की शरण में हूं। आज्ञा भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। जिसकी आज्ञा में रहना स्वीकार किया है, प्रतिज्ञा ग्रहण की है, जिसके अनुशासन को स्वीकार किया है, उस व्यक्तित्व की आज्ञा को ससम्मान शिरोधार्य करना चाहिए। जीवन की एक बड़ी सफलता है अपने आज्ञादायी की आज्ञा का हृदय से, अन्तर्मन से समीचीनतया पालन करना। कभी-कभी आदमी के मन में भावना नहीं होती कि यह आज्ञा पालूं, पर विवशतावश उसे वह आज्ञा पालनी पड़ती है। पालनी पड़े, यह बहुत गौरव की बात नहीं है। उसका पालन आसानी से हो जाए या आसानी से किया जाए, यह बड़ी बात होती है।

तेरापंथ धर्मशासन में आज्ञा का बड़ा महत्त्व है। हमारे मर्यादा पत्र में भी आज्ञा की बात आती है। हमारा मर्यादा पत्र, जिसे सामान्य बोलचाल की भाषा में हम 'हाजरी' कहते हैं, बहुत महत्त्वपूर्ण है। बनाने वालों ने इस पर अच्छा श्रम किया है और बहुत अच्छा लिखा है। जब हम इस संदर्भ में विचार करते हैं तो कह सकते हैं कि हमारे पूर्वाचार्यों ने कितना काम किया है, कितनी अच्छी व्यवस्थाएं प्रदान की हैं। आगे से आगे वे यथापेक्षा नई बात जोड़ते गए और पुरानी बात को यथोचित रूप में सुरक्षित रखने का प्रयास भी किया है।

हमारे धर्मसंघ में आचार्यों की आज्ञा का बहुत महत्त्व है। उनकी आज्ञा सर्वोपरि होती है। दूसरे शब्दों में कहूं तो उनकी आज्ञा 'अनचैलेंजेबल' (जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती) होती है। वह चुनौती देने लायक नहीं, सिर पर धारण करने योग्य होती है।

'सर्व साधु-साध्वियां एक आचार्य की आज्ञा में रहें'--यह तेरापंथ शासन की सिरमौर मर्यादा है। आज्ञा लक्ष्मणरेखा है, इसलिए कभी भी, किसी भी रूप में आज्ञा का उल्लंघन नहीं होना चाहिए। जो आज्ञा लागू है, जो निर्देश दिया गया है, उसके प्रति जागरूकता रहे। कभी अग्रणी भी सहवर्ती से यह कह दे कि 'ऐसा करने की मेरी आज्ञा नहीं है' तो सहवर्ती को समझ लेना चाहिए कि 'वीटोपावर' काम में लिया जा रहा है, अब इसका उल्लंघन करना मेरा धर्म नहीं है। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने शिक्षा दी है--**'आज्ञा शब्द प्रयोगस्तु कर्तव्यो न यदा-कदा।'** झटपट 'आज्ञा' शब्द का प्रयोग करना भी नहीं चाहिए। अगर कर लिया जाए तो अधीनस्थों, सहवर्तियों को उसका लंघन नहीं करना चहिए। आज्ञा का लंघन कर दे तो अग्रणी अपने सहवर्ती

को संघमुक्त भी कर सकता है। हालांकि सामान्यतया ऐसा कदम झटपट नहीं उठाना चाहिए। पहले शास्ता को जानकारी देनी चाहिए, उनकी दृष्टि लेनी चाहिए। सहवर्ती को संघ से अलग करना फिर भी अग्रणी के हाथ की बात है, लेकिन अलग करने के बाद उसे फिर वापस लेना अग्रणी के हाथ की बात नहीं है। वह फिर गुरु के हाथ की बात है। अलग करने का अधिकार तो है, किन्तु अलग करने के बाद वापस संघ में लेना अग्रणी के अधिकार की बात नहीं है। फिर तो आचार्यों के द्वारा ही निर्देश प्राप्त कर वापस संघ में लिया जा सकता है। इस प्रकार आज्ञा का बड़ा महत्त्व है।

विहार-चतुर्मास आचार्य की आज्ञा से करें--साधु-साध्वियों को विहार किधर करना है? जिधर आचार्य की आज्ञा है। पूर्व की ओर आज्ञा है तो पूर्व की ओर, पश्चिम की ओर आज्ञा है तो पश्चिम की ओर, जिधर के लिए आज्ञा हो, उधर विहार कर देना चाहिए। विहार का आदेश हो जाने के बाद फिर साधु-साध्वी का मस्तिष्क मानों उस दिशा में चलने लग जाए कि अब हमें जल्दी यहां से निर्दिष्ट दिशा की ओर विहार कर देना चाहिए। साधु-साध्वियों में कितनी आज्ञानिष्ठा है कि गुरु द्वारा प्राप्त निर्देश अथवा दृष्टि के बाद उसकी अनुपालना के लिए वे तत्पर रहते हैं। इस मायने में समणश्रेणी कोई अलग नहीं है। उसमें भी निर्देश के प्रति कितना अहोभाव और सम्मान का भाव है। मैं तो काफी अंशों में समणियों को भी साध्वियों की तरह देखता हूं। काफी अंशों में निरवद्य प्रवृत्तियों में वही आज्ञा, वही निर्देश समणश्रेणी के लिए भी है। इस मायने में मुझे ये साध्वियों से अलग नहीं दिखतीं। समणियां भी आज्ञा के प्रति बहुत जागरूक हैं। ये देश में हों, विदेश में हों, न्यारां में हों या गुरुकुलवास में हों, यहां-वहां कहीं भी हों, आज्ञानिष्ठा के जैसे संस्कार साध्वियों में हैं, वैसे ही संस्कार समणश्रेणी में भी मैं देखता हूं।

यह आज्ञानिष्ठा कल्याण का एक आधार बनती है। मन में आज्ञा के प्रति निष्ठाभाव जीवन की एक उपलब्धि है, सफलता है। हो सकता है आज्ञा कभी किन्हीं परिस्थितियों में कुछ मनोनुकूल न भी हो या उसकी अनुपालना में कुछ कठिनाई हो, पर कठिनाई या प्रतिकूलता की अपेक्षा आज्ञा का पालन अधिक महत्त्वपूर्ण है। थोड़ी कठिनाई झेलकर भी आज्ञापालन का प्रयास करना चाहिए। आध्यात्मिक संदर्भों में आचार्यों की जो आज्ञा, इंगित या निर्देश है, उसके प्रति जागरूक रहना--यह साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का ही नहीं, श्रावक-श्राविकाओं का भी धर्म है।

पढ़े-लिखे प्रबुद्ध लोगों और लंबे-चौड़े व्यवसाय को सफलतापूर्वक चलाने वाले अथवा चलाने की क्षमता रखने वाले लोगों का संघ सेवा में अपना समय लगाना भी महत्त्वपूर्ण बात है। ऐसे कई लोगों को मैं लंबे समय से देख रहा हूं जो कारोबारी व्यक्ति होकर भी शासन की सेवा में संलग्न रहकर आध्यात्मिक संदर्भों में आचार्यों की आज्ञा के प्रति जागरूक रहते हैं। यह एक बड़ी बात है। संघ सेवा के जो संस्कार हमारे पुरखों ने हममें भरे हैं, वे संस्कार पुष्ट होते रहें।

हमारे धर्मसंघ में शिष्याकर्षण नहीं रहना चाहिए। शिष्याकर्षण मुझे जानने में नहीं आ रहा है। शिष्याकर्षण इस रूप में कि मेरा कोई शिष्य-शिष्या या चेला-चेली हो। ऐसी कोई मांग भी नहीं हो रही है। पुस्तक, पन्ने, पेंसिल, पात्र आदि तो घरों से प्राप्त भी हो सकते हैं, पर साधु या साध्वी चाहिए तो वे कहां से मिलेंगे? ये हमारे पास मिलते हैं। साधु-साध्वियों के द्वारा आचार्य से सहवर्ती की मांग तो होती है और ऐसी मांग करना गलत भी नहीं है। इस सन्दर्भ में उनको हमसे अपेक्षा रखनी भी चाहिए। जरूरत पड़ने पर मांग करनी ही पड़ेगी। गुरु बिना मांग के दे दें तो उत्तम बात है। लेकिन इस अपेक्षा की पूर्ति हमारे द्वारा कभी होती है, कभी नहीं भी होती है और कभी देकर भी वापस ले सकते हैं, लेते हैं। हमारे साधु-साध्वियां जानते हैं कि यहां अपना निजी और व्यक्तिगत कुछ भी नहीं, सब गुरु का है, संघ का है। ऐसे संस्कार रहने भी चाहिए कि अपेक्षा हो तो अपने सहवर्ती साधु या साध्वी को प्रसन्नमना गुरु को समर्पित कर दें। गुरु को निवेदन करें--'आप का दिया हुआ आपको समर्पित है, आप काम में लें और संभव हो तो यथासमय हमारी अपेक्षा पर भी ध्यान देने की कृपा कराएं।' इस प्रकार का समर्पण भी बहुत अच्छी और विशेषता की बात होती

है। साधु-साध्वियों की उचित मांग को यथासंभव पूरा करने का प्रयास आचार्यों को भी करना चाहिए। आखिर साधु-साध्वियां संघ की शरण में हैं, उनका ध्यान रखना आचार्यों का कर्त्तव्य है।

जितनी सामग्री पास में हो और जितना औचित्य हो, उसके अनुसार व्यवस्थापन होना भी चाहिए। कभी-कभी साधु-साध्वियों की आपूर्ति नहीं भी हो पाती है। साध्वियों के सिंघाड़े तीन-तीन ठाणों से विचरते हैं। तीन साध्वियों का विचरना हमारे लिए कोई संतोषप्रद बात नहीं है और होनी भी नहीं चाहिए। संतों के सिंघाड़े में तो दो भी रहें तो काम चल सकता है, पर साध्वियों के सिंघाड़े में तीन नहीं, चार साध्वियां होनी चाहिए। तीन में कुछ कमी और संकड़ाई रह सकती है। लेकिन कई बार हमारी साध्वियां कठिनाई में तीन से भी काम चला लेती हैं। उन सिंघाड़ों को हमारा साधुवाद है जो इस प्रकार का संतोष भाव रखते हैं। संतों के सिंघाड़ों में भी कोई वृद्ध है और तीन की अपेक्षा होते हुए भी हम तीसरे की आपूर्ति नहीं कर पाते तो संकड़ाई का अनुभव करते हुए भी दो से अपना काम चलाते हैं।

हमारे धर्मसंघ में आज्ञा का बड़ा महत्त्व है। गुरुओं की आज्ञा के प्रति साधु-साध्वियों और समणश्रेणी में जो अहोभाव है, वह विशिष्ट है। यहां बात-बात में आज्ञा लागू हो जाती है। दूर बैठे हम किसी को जो भी आदेश देते हैं, उसे वे किस प्रकार शिरोधार्य कर लेते हैं। हमारे विनीत साधु-साध्वियां और समणश्रेणी किस प्रकार आचार्यों की आज्ञा को सम्मान/बहुमान दे रहें हैं, यह हमारे लिए बहुत ही सात्त्विक आह्लाद का विषय है। मैं तो ऐसे साधु-साध्वियों और समणश्रेणी का मिलना आचार्यों का सौभाग्य मानता हूं। आज्ञा के प्रति सबकी निष्ठा पुष्ट होती रहे, मंगलकामना।''

•

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण कच्छ में

बंधन और मोक्ष का मूल है भाव

२७ मार्च। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः विहार के दौरान भचाऊ में प्रवासित तीन तेरापंथी परिवारों के घरों का स्पर्श किया तथा वहां कुछ क्षण विराजमान होकर परिवारों को सेवा का अवसर भी प्रदान किया। पूज्यचरणों के स्पर्श से अपने घर को पावन बना देखकर पचपदरा, आमेट और उदयपुर निवासी ये परिवार अत्यन्त आह्लादित थे। स्थानीय रावले में भी पूज्यवर का पावन पदार्पण हुआ। ठाकुर अशोकसिंह झाला आदि ने आचार्यवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर स्थानकवासी अजरामर लीमड़ी सम्प्रदाय के स्थानक में भी पधारे और वहां कुछ क्षण विराजमान होकर स्थानकवासी समाज के लोगों को पावन संबोध प्रदान किया। लोगों ने बताया--जब गुरुदेव तुलसी कच्छ यात्रा के दौरान भचाऊ पधारे थे, तब इसी स्थानक में विराजमान हुए थे। भूकंप में ध्वस्त होने के उपरान्त इस स्थान का पुनर्निर्माण किया गया है। तत्पश्चात लगभग ६.०५ किमी. का विहार कर सीकरा पधारे। सरपंच श्री हंसमुखभाई के नेतृत्व में गांववासियों ने पूज्यवर का भावपूर्ण स्वागत किया। यहां आचार्यवर का प्रवास स्थानीय प्राथमिक शाला में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'अध्यात्म साधना के क्षेत्र में भावविशुद्धि का सर्वाधिक महत्त्व होता है। व्यक्ति बाह्य क्रिया क्या करता है, इसका महत्त्व बहुत कम अथवा नहीं होता है। कर्म-बंधन और मोक्ष के संदर्भ में मुख्यतया अथवा पूर्णतया भावना ही जिम्मेदार तत्त्व होता है। भावना से महाकर्म का बंध भी हो सकता है तो भावना से मोक्ष की ओर अग्रसर भी हुआ जा सकता है। भाव ही बंधन और मोक्ष का मूल कारण होता है। इसलिए व्यक्ति को भावविशुद्धि का अभ्यास करना चाहिए। क्रोध, छल-कपट, अहं, लिप्सा आदि मलिन भाव हैं। भावों की मलिनता बंधन का कारण बनती है तो पवित्र भाव मोक्ष के निकट ले जाने वाले होते हैं।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'व्यक्ति केवल वर्तमान को ही न देखे, उसे अपने अगले जीवन के बारे में

भी चिंतन करना चाहिए। यह जीवनकाल तो छोटा-सा है। आगे अनंतकाल है, इसलिए भविष्य के बारे में भी चिंतन करते हुए आत्मकल्याण के प्रति जागरूक रहना चाहिए। अगली गति उसकी अच्छी हो सकती है, जिसके भाव पवित्र रहते हैं। जिसके भाव राग-द्वेषक्षय संपोषक बने रहते हैं, उसकी अगली गति अच्छी हो सकती है। जो लोग अवस्था प्राप्त हैं, उन्हें तो आत्मकल्याण के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहना चाहिए। अधिकाधिक समय पवित्र भावों के साथ सत्कार्यों में लगाने का प्रयास करना चाहिए। भाव विशुद्धि के द्वारा व्यक्ति आत्मोत्थान की दिशा में आगे बढ़ सकता है।'

कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक उद्‌बोधन हुआ। सीकरा के सरपंच श्री हंसमुखभाई शाह ने पूज्यप्रवर के स्वागत में भावाभिव्यक्ति दी। श्रीमती ज्योति मेहता ने गीत का संगान किया। कच्छ की समणी रुचिप्रज्ञाजी ने कच्छ की धरा पर पूज्यवर की अभ्यर्थना की।

लन्दन से पी.एच.डी. कर रही समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी और उनकी सहयोगिनी समणी हिमप्रज्ञाजी ने लन्दन में लगभग छह मास का प्रवास संपन्न करने के उपरान्त आज पूज्यवर के दर्शन किए। कार्यक्रम में समणीद्वय ने अपने लन्दन प्रवास के अनुभवों को प्रस्तुति दी।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने इस प्रसंग में कहा--'समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी लन्दन से आई हैं। हमारी समणियों में प्रतिभाप्रज्ञाजी एक प्रतिभा हैं। इनमें चिंतनशीलता है, इनका अपना अध्ययन भी है और ये अपना विकास भी कर रही हैं। समणी हिमप्रज्ञाजी और समणी रुचिप्रज्ञाजी कच्छ से संबद्ध हैं। इनका भी कच्छ में आना हो गया। सभी खूब अच्छा विकास करें।'

गत अनेक दिनों से प्रार्थना कर रहे रापरवासियों की भावना पर अनुग्रहवृष्टि करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सन् २०१३ की महावीर जयंती रापर में करने की घोषणा की। रापर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री रमणीकभाई ने पूज्यवर के अनुग्रह हेतु सादर कृतज्ञता व्यक्त की।

स्वयं को मित्र बनाएं

२८ मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यवर ने प्रातः सीकरा से बारह किमी. का विहार कर बुढारमोरा (परमेश्वरनगर) पधारे। यहां आपका प्रवास प्राथमिक शाला में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। गांव के सरपंच श्री मोहनभाई सथवारा के पुत्र श्री लालभाई सथवारा ने पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में मित्र बनाए जाते हैं। मित्रों के साथ मधुर आलाप-संलाप भी किया जाता है। कहीं-कहीं तो इतनी घनिष्ठ मित्रता होती है कि दिल खोलकर बातें की जाती हैं। किसी को मित्र बनाना कोई बुरी बात नहीं, किन्तु इतना ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिए कि मित्र योग्य है या नहीं? अयोग्य को अपना मित्र नहीं बनाना चाहिए। मित्र बनाने से पूर्व योग्य और अयोग्य का विवेचन होना चाहिए। एक शब्द आता है--कल्याणमित्र। यह बहुत अर्थवान शब्द है। कल्याण की दिशा में आगे बढ़ने में सहयोग देने वाला मित्र कल्याणमित्र होता है। व्यक्ति यह सोचे कि मेरा मित्र कल्याणमित्र है या नहीं? मात्र टाइम पास करने के लिए किसी को अपना मित्र बनाना बड़ी बात नहीं है। समय को धन कहा गया है। उसका उपयोग सोच-समझकर पवित्र कार्यों में करना चाहिए। जो समय को बर्बाद करता है, वह स्वयं बर्बाद हो जाता है। जो उसका पवित्र कार्यों में उपयोग करता है, वह पवित्र बन जाता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'दूसरों को मित्र बनाया जाता है, इससे भी ऊंची बात है स्वयं को अपना मित्र बनाना। अध्यात्म की भूमिका में यह उत्तम बात होती है। सत्प्रवृत्ति में संलग्न अपनी आत्मा अपनी मित्र होती है और दुष्प्रवृत्ति में निरत अपनी आत्मा अपनी शत्रु होती है। सन्मार्ग, सन्मति और सत्प्रवृत्ति में रहना स्वयं को स्वयं का मित्र बनाने जैसा है। यदि व्यक्ति दूसरों का बुरा करता है तो वह स्वयं का शत्रु बन

जाता है और यदि वह दूसरों का हित करता है तो उसकी आत्मा मानों स्वयं का हित करने लग जाती है। जहां संयम की साधना होती है, तपस्या होती है, मैत्री होती है, वहां आत्मा स्वयं की मित्र बन जाती है। इसके विपरीत जहां विराधना होती है, जहां द्वेष होता है, पापकृत्य का आसेवन होता है, वहां आत्मा स्वयं की शत्रु बन जाती है। व्यक्ति को यह चिन्तन करना चाहिए कि स्वयं के साथ हमारी गहरी मित्रता है या नहीं? स्वयं स्वयं का मित्र बनकर व्यक्ति कल्याण को प्राप्त हो सकता है।' पूज्यवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

कल पर न छोड़ें आज का करणीय कार्य

२६ मार्च। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः १३.०३ किमी. का विहार कर कोटड़ा पधारे। स्थानीय प्राथमिक शाला में आपका प्रवास हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान पूज्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'व्यक्ति कभी-कभी किसी कार्य को कल (अगले दिन) करने की सोचता है। शास्त्रकारों ने कहा है--कल की इच्छा वह करता है, जिसकी मौत के साथ मैत्री हो, जो दौड़ में इतना तेज हो कि मौत के हाथ न आए अथवा जो अमर हो। किन्तु दुनिया में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है। आत्मा शाश्वत होती है और शरीर नश्वर होता है। हमारा जीवन केवल शरीर और केवल आत्मा नहीं है। जहां शरीर और आत्मा का योग होता है, वहां जीवन होता है। यह संबंध स्थायी नहीं होता, इसलिए जीवन नश्वर है। व्यक्ति यदा-कदा यह सोचता रहे कि मेरा जीवन नश्वर है, इसलिए मैं जागरूक रहूं, मूर्च्छा में न रहूं। धर्म के संदर्भ में जो आज करणीय है, उसे आज ही करना चाहिए।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'जीवन है तो उसके साथ मृत्यु भी जुड़ी हुई है। जिस समय मृत्यु आती है, व्यक्ति अशरण बन जाता है। व्यक्ति को अच्छा जीवन जीना चाहिए और मरना भी अच्छे तरीके से चाहिए। जीना एक कला है तो मृत्यु भी एक कला है। व्यक्ति को मोह-माया में आसक्त होकर नहीं, धर्माराधना करते हुए मृत्यु का वरण करना चाहिए। अन्तिम समय किस रूप में व्यतीत होता है, यह विशेष बात होती है। जैन धर्म में अनशन की बात आती है। व्यक्ति अनशन की अवस्था में अध्यात्म साधना करते-करते देह-त्याग करे तो महत्त्वपूर्ण बात होती है।'

गृहस्थवर्ग को प्रेरणा प्रदान करते हुए आचार्यवर ने कहा--'गृहस्थ को साठ-सत्तर वर्ष की आयु के पश्चात् अपने जीवन को मोड़ देना चाहिए। एक अवस्था के बाद घर में रहते हुए भी गृहस्थ साधु जैसा जीवन जीए, उसके कुछ सूत्र हैं--

- अर्थार्जन से यथासंभव निवृत्ति होनी चाहिए। मेरा चिंतन है कि केवल टाइम पास करने के लिए व्यवसाय में क्यों जाना चाहिए? संतों की सेवा, धर्माराधना आदि में समय का सदुपयोग करना चाहिए।
- धर्माराधना में खूब समय लगाना चाहिए। श्रावक को खूब सामायिक करनी चाहिए। आगम और अच्छे ग्रंथों का स्वाध्याय करना चाहिए।
- यथासंभव गुरुओं की सेवा-उपासना भी करनी चाहिए।
- संलेखना की ओर आगे बढ़ना चाहिए। यथाशक्ति त्याग का अभ्यास करना चाहिए।
- व्रत चेतना को विकसित बनाना चाहिए। त्यागप्रधान जीवनशैली अपनानी चाहिए।
- जब लगे कि जीवन का संन्ध्याकाल आ गया है तो अनशन का चिंतन करना चाहिए। व्यक्ति यह सोचे कि शरीर मुझे छोड़े, उससे पूर्व धर्माराधना करते हुए मैं ही उसे छोड़ने का प्रयास करूं। मृत्यु भी एक कला है। व्यक्ति उसके द्वारा अन्तिम समय में भी अपनी परिणामधारा को उज्ज्वल रख सकता है।

कार्यक्रम में आचार्यवर ने फतेहगढ़वासियों की प्रार्थना पर पूर्व निर्धारित एकदिवसीय फतेहगढ़ प्रवास में एक दिन और बढ़ाने तथा कच्छ प्रवास के दौरान एक और दीक्षा समारोह करने की घोषणा की। स्थानीय

शिक्षक श्री श्यामजीभाई ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। समणी हिमप्रज्ञाजी ने गुजराती भाषा में गीत का संगान किया। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

पूज्यवर के पदार्पण से कोटड़ा ग्रामवासियों में हर्षोल्लास का वातावरण था। ग्रामीणों के समूह आचार्यवर के दर्शन कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। सायंकाल अनेक ग्रामीण महिलाएं दूध लेकर आईं और आचार्यवर से उसे लेने का अनुरोध करने लगीं। इसी प्रकार अनेक महिलाओं ने रुपये भेंट करने की इच्छा व्यक्त की। उन्हें जैन साधुचर्या की जानकारी दी गई।

शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी का स्वर्गवास

आज मध्याह्न में शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। वे प्रातःकाल परमाराध्य आचार्यप्रवर के साथ तेरह किमी. का विहार कर कोटड़ा पहुंचे थे। विहार के पश्चात उन्हें अपने स्वास्थ्य में कुछ कठिनाई महसूस हुई, किन्तु कुछ समय के पश्चात वे पुनः स्वस्थता का अनुभव करने लगे। मध्याह्नकालीन आहार का क्रम परिसंपन्नता की ओर था। वे लेटे-लेटे विश्राम कर रहे थे। अचानक उनका स्वास्थ्य बिगड़ा। परमाराध्य आचार्यप्रवर भी उस कक्ष में पधारे। सबके देखते-देखते उनकी देह शिथिल हुई और वे कालधर्म को संप्राप्त हो गए। भचाऊ से समागत चिकित्सक ने परीक्षण के पश्चात उनके स्वर्गवास की अधिकृत सूचना दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने उनकी पार्थिव देह को गृहस्थों को सौंपने से पूर्व कहा--'शासनश्री मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के पास दीक्षित हुए। परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी की बहुत सेवा की, फिर हमारी सेवा की। धर्मसंघ को अपनी सेवाएं दीं। हमने एक अच्छे मुनि के रूप में उन्हें देखा। वे कालधर्म को प्राप्त हो गए।' इस प्रकार उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्यवर ने उनकी पार्थिव देह कच्छ प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री बाबूलाल सिंघवी, महामंत्री श्री शान्तिलाल बागरेचा आदि को सौंप दी। श्रावक समाज द्वारा उनकी पार्थिव देह को गांधीधाम ले जाया गया, जहां ३० मार्च को मध्याह्न में उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उनकी अन्तिम यात्रा में तेरापंथ समाज के अतिरिक्त अन्य जैन समाज की भी अच्छी उपस्थिति रही। जैन समाज ने इस अवसर पर अपने प्रतिष्ठान भी बंद रखे।

साधना का सार है वीतरागता

३० मार्च। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः कोटड़ा से आठ किमी. का विहार कर कनैबे पधारे। यहां आपका प्रवास एम.आर.के. पाइप लिमिटेड में रहा।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अध्यात्म साधना करने वाले व्यक्ति को मुख्यतया अपनी आत्मा की ओर अभिमुख रहना चाहिए। जिसका ध्यान केवल आत्मा में लग जाता है, वह अध्यात्म के क्षेत्र में कुछ निष्पत्ति प्राप्त कर सकता है। आत्मा की ओर अभिमुख होने का अर्थ है--राग-द्वेष विमुक्ति की साधना। जिसमें राग-द्वेष की प्रबलता होती है, वह व्यक्ति आत्मदर्शन से दूर रहता है। जैसे तालाब के अन्तस्तल को देखने के लिए पानी की स्वच्छता और स्थिरता आवश्यक होती है, उसी प्रकार आत्मदर्शन के निकट होने के लिए मन की स्वच्छता और एकाग्रता आवश्यक है। अध्यात्म के क्षेत्र में आत्मा का महत्त्व है। आत्मा के आधार पर ही अध्यात्म का प्रासाद टिका हुआ है। राग-द्वेष की विमुक्ति महत्त्वपूर्ण बात होती है। यह साधना का सार है। व्यक्ति जितना-जितना वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ता है, वह उतना ही आत्मा के निकट होता जाता है और फिर कभी आत्ममय भी बन सकता है। साधक को आत्मा को पाने का समुचित प्रयास करना चाहिए।। इस जन्म में आत्मा न मिले तो उसे निकट तो किया ही जा सकता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'आत्मा है या नहीं, यह विवाद का विषय भी है। इस प्रकार का सन्देह होने पर भी व्यक्ति को सन्मार्ग पर चलने का प्रयास करना चाहिए। सज्जनता रहनी चाहिए, दुर्जनता को छोड़ना

चाहिए। शारीरिक रूप से सज्जन और दुर्जन का भेद करना मुश्किल होता है, किन्तु व्यक्ति के आचरणों से सज्जन और दुर्जन की पहचान हो सकती है। दुर्जन के धन, ज्ञान और शक्ति क्रमश अहं, विवाद व दूसरों को पीड़ा पहुंचाने के कारण बनते हैं। वह इनका दुरुपयोग करता है। जबकि सज्जन इसके विपरीत आचरण करता है। आत्मसाधना दुर्जन से दूर रहती है। जहां साधुता और साधना होती है, वहां आत्मा के निकट रहा जा सकता है। कोई आत्मा को न माने तो भी उसे इस जीवन को शान्तिपूर्ण ढंग से जीने के लिए व्यर्थ राग-द्वेष से बचने का अभ्यास करना चाहिए।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन के उपरान्त **फतेहगढ़ की मुमुक्षु नीता को १५ अप्रेल २०१३ को गांधीधाम में समणी दीक्षा प्रदान करने की उद्घोषणा की।** पूज्यप्रवर द्वारा महावीर जयंती रापर में करने की उद्घोषणा से आह्लादित रापर जैन समाज के प्रमुख व्यक्ति आज श्रीचरणों में कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए उपस्थित हुए। कार्यक्रम में रापर जैन छहकोटि संघ के प्रमुख श्री नवीनभाई तथा तेरापंथी सभा के मंत्री श्री मधुभाई ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी की स्मृति सभा

३१ मार्च। प्रातः लगभग बारह किमी. का विहार कर आचार्यवर धाणेटी पधारे। श्री राणाभाई अहीर ने गांव की ओर से आचार्यवर का स्वागत किया। धाणेटी में आचार्यवर का प्रवास विवेकानंद विद्यालय में हुआ। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में २९ मार्च को गुरुकुलवास में स्वर्गस्थ शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी की स्मृति सभा आयोजित हुई। इसमें मुनि विजयकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, मुनि राजकुमारजी, मुनि जयकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, मुनि योगेशकुमारजी, मुनि पुलकितकुमारजी, मुनि जंबूकुमारजी(मिंजूर), मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि अनेकान्तकुमारजी, मुनि जागृतकुमारजी, मुनि सिद्धकुमारजी ने शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी की विशेषताओं का उल्लेख किया। मुनिश्री के वर्षों तक साथ रहे मुनि जितेन्द्रकुमारजी, मुनिश्री के प्रथम सहगामी मुनि गौतमकुमारजी ने उनके साथ बिताए क्षणों का स्मरण किया। समणी कुसुमप्रज्ञाजी, कच्छ प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री बाबूलाल सिंघवी, मंत्री श्री शान्तिलाल बागरेचा, उपासक श्री चन्द्रप्रकाश मेहता, मधु मेहता, मुनिश्री के संसारपक्षीय भतीजे श्री सत्यभूषण जैन ने मुनिश्री के विषय में अपने उद्गार व्यक्त किए।

मुख्यनियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने कहा--'कुछ लोग ऐसे होते हें, जिनके भाग्य का योग अच्छा होता है। कुछ के पुरुषार्थ का तो कुछ के भाग्य और पुरुषार्थ, दोनों का योग अच्छा होता है। मुनि राजेन्द्रकुमारजी के भाग्य व पुरुषार्थ दोनों का अच्छा योग था। उन्हें तीन गुरुओं की सन्निधि व सेवा का अवसर मिला। सेवा उसे सुलभ होती है, जो निगर्वी होता है। मुनिश्री संस्कृत के अच्छे जानकार थे। आचार्य महाप्रज्ञजी कहा करते थे कि राजेन्द्रजी खोजी व धुनी हैं। संस्कृत व्याकरण की पुस्तक 'श्रीभिक्षुशब्दानुशासनम्' जो प्रति के रूप में थी, उसे उन्होंने संपादित कर वृहद् ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत किया।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'मुनि राजेन्द्रकुमारजी ने अपने जीवन में विनम्रता, ग्रहणशीलता के साथ अनेक गुणों को ग्रहण किया और प्रकट किया। उन्होंने शब्दशास्त्री के रूप में अपनी पहचान बनाई। एक विशेषज्ञ के रूप में अपनी पहचान बनाना कोई मामूली बात नहीं है। आचार्यवर के इंगित से कई वैयाकरणी तैयार हों, यह अपेक्षा है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'आचार्यवर से 'शासनश्री' जैसा सार्थक संबोधन प्राप्त राजेन्द्र मुनि गुणवान संत थे। ऐसे मुनि शासन की शोभा बनते हैं। आचार्यवर दो प्रकार की साधना की प्रेरणा देते हैं--कषायमंदता व मान्य आचार के प्रति जागरूकता। दोनों प्रकार की साधना उनमें प्रतिबिंबित होती थी। उनकी दीक्षा दिगंबर आचार्य देशभूषणजी एवं स्थानकवासी आचार्य आनंदऋषिजी की उपस्थिति में आचार्य तुलसी के करकमलों से हुई। वे साध्वी जिनप्रभाजी के सहदीक्षित थे। उनकी श्रद्धा, समर्पण व सेवा उल्लेखनीय थी।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'दुनिया में कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं, जो अध्यात्म की साधना हेतु अभिनिष्क्रमण करते हैं और मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं। ऐसे लोग मानों वसुधा के विभूषण होते हैं। ऐसे पुरुषों में एक नाम मघवागणी का है, जो तेरापंथ के पंचमाचार्य थे। आज के दिन चैत्र कृष्णा पंचमी को उनका महाप्रयाण हुआ था। मघवा जैसे वीतरागकल्प व्यक्ति तेरापंथ को आचार्य रूप में प्राप्त हुए। उनकी साधना की निर्मलता विशिष्ट थी, ऐसा कहा जा सकता है। अष्टम अधिशास्ता कालूगणी उनकी महान देन थे। घर से अभिनिष्क्रमण करने के बाद जो साधु बन जाता है और संघबद्ध साधना का पथ स्वीकार करता है, उसे सोचना चाहिए कि मुझे दूसरों को सेवा देनी है, दूसरों को साता व समाधि पहुंचाने का समुचित प्रयास करना है।'

स्वर्गस्थ राजेन्द्र मुनि की स्मृति करते हुए आचार्यवर ने कहा--'शासनश्री मुनिश्री राजेन्द्रकुमारजी स्वामी परसों कालधर्म को संप्राप्त हो गए। मैंने उनको लंबे काल तक देखा है। मेरी दीक्षा उनसे लगभग नौ वर्ष बाद बहिर्विहार में हुई। बाद में मैं गुरुकुलवास में आ गया। वे पहले से ही गुरुकुलवास में थे। मैं उनकी सेवा भावना को याद करता हूं। आचार्य महाप्रज्ञजी की मुनि अवस्था से उनके सान्निध्य में रहने लगे थे। उनके महाप्रयाण के बाद सेवाभावना की दृष्टि से वे कुछ इस तरह मेरे साथ जुड़ गए, मानो कि उन्होंने मुझे आचार्य महाप्रज्ञजी मान लिया। वैसे सेवा की दृष्टि से मेरे पास संत पहले से जुड़े हुए हैं। उनका एक क्रम-सा बन गया कि मेरे प्रातः उठने से पूर्व पहुंच जाना। सूर्यास्त से पहले भी वे मेरे पास आ जाते और विहार में प्रायः साथ चलते। विहार में जहां रुकते, वहां अपेक्षानुसार मेरे शरीर का स्वेद पोंछते। सेवा का उनमें अच्छा गुण था। साधु में वैसे भी सेवा की वृत्ति होनी चाहिए--यथोचित रूप में न्यून सेवा लेना, उसमें स्वावलंबिता रहना और अपेक्षानुसार स्वयं को सेवा में नियोजित करना। साधना की दृष्टि से मुझे वे निर्मल लगे। मैं गुरुकुलवास में रहा हूं। मुझे याद नहीं कि उन्हें साध्वाचार के संदर्भ में कभी उलाहना मिला हो।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'साधु के लिए स्वाध्यायशीलता आहार है। राजेन्द्र मुनिश्री में कितनी अध्ययनशीलता थी। वर्तमान में संस्कृत व्याकरण के अध्येता साधुओं में उनका विशिष्ट स्थान था। उन्होंने कई ग्रंथों का संपादन किया। 'श्रीभिक्षुशब्दानुशासनम्' का संपादन कर विद्यार्थी साधु-साध्वियों के लिए उसे सुलभ बना दिया। लगता है उन्हें दीर्घ जीवन मिलने का योग नहीं था। मैंने सुना कि उनके मन में हमारे साथ नेपाल की यात्रा करने की इच्छा थी जो पूरी नहीं हो सकी। उनके चले जाने से धर्मसंघ में एक स्थान रिक्त हो गया। वे सेवाभावी, अध्ययनशील व विनम्र संत थे। मैंने सबसे पहले संतों में 'शासनश्री' संबोधन उन्हें दिया था। यह संबोधन गरिमापूर्ण एवं महत्त्वपूर्ण है। उनके जीवन से प्रेरणा मिलती रहे।'

मुनिश्री के सहयोगी रहे मुनि गौतमकुमारजी के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'यह यदा-कदा मेरे पास बैठा रहता है, निष्ठा से सेवा करता है और अपनी ड्यूटी के प्रति जागरूक है। पहले जब मैं गोचरी जाता तो यह झोली लेकर आ जाता। मुनि जितेन्द्रजी का वर्षों तक साहचर्य रहा। ये निष्ठाशील युवा संत हैं। गुरुकुलवास में व्यवस्था के अनेक कार्यों से जुड़े हुए हैं। आगम कार्य से भी संपृक्त बने हैं। ज्ञात हुआ कि मुनि दुलहराजजी स्वामी की जीवनी तो राजेन्द्र मुनिश्री ने लिख दी। अब ये राजेन्द्रमुनि की जीवनी तैयार करें। मुनि सिद्धकुमार भी अच्छा बाल साधु है। यह भी अपनी साधना का विकास करता रहे।' आचार्यवर ने प्रसंगवश साध्वीप्रमुखाजी, मंत्रीमुनिश्री एवं मुख्यनियोजिकाजी की सेवाओं का भी उल्लेख किया। मुनिश्री की स्मृति में सामूहिक रूप से चार लोगस्स का ध्यान हुआ।

मध्याह्न में भारत के प्रसिद्ध बंदरगाह कांडला पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमैन श्री पी.डी.बाघेला (आई.ए.एस) ने पूज्यवर के दर्शन किए और कांडला पोर्ट पधारने का आमंत्रण दिया। उनके साथ अणुव्रत, अहिंसा प्रशिक्षण आदि के संदर्भ में चर्चा चली।

सदैव स्मृति में रखें उपकारी के उपकार को

१ अप्रेल। प्रातः लगभग दस किमी. का विहार कर आचार्यवर पध्धर पधारे। मार्ग में अवस्थित सुजलोन

फैक्ट्री में आचार्यवर के इंगित से कई संत गए। इस फैक्ट्री में पवनचक्की के पंख निर्मित होते हैं। फैक्ट्री के प्रबंधक श्री हिमांशुजी ने संतों का स्वागत किया और बताया--'ये पंख अधिकतम अड़तालीस फीट लंबे होते हैं। अभी कच्छ जिले में बड़ी संख्या में ये पवनचक्कियां स्थापित हुई हैं। फैक्ट्री में तीन से चौदह करोड़ रुपये तक उत्पादित होने वाली इन पवनचक्कियों से बिजली पैदा होती है। वैकल्पिक ऊर्जा के तौर पर सोलार एवं विंडमिल एनर्जी हेतु सरकार पूरा सहयोग कर रही है।'

पध्धर में आचार्यवर का प्रवास प्राथमिक शाला में हुआ। विद्यालय में आयोजित प्रातःकालीन कार्यक्रम में स्कूली छात्राओं ने 'गुरुजी पधारो म्हारै आंगणै' गीत का संगान किया। विद्यालय के प्राचार्य श्री दशरथभाई कापड़िया ने पूज्यवर का स्वागत किया। गांव के सरपंच श्री नेफाभाई पटेल ने भी अपने विचार रखे। मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी वक्तव्य हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में उपकार का बड़ा महत्त्व है। समर्थ व्यक्ति असमर्थ व्यक्ति पर उपकार करता है। असमर्थ व्यक्ति जिससे उपकृत हुआ है, उसके प्रति उपकृत के मन में कृतज्ञता का भाव है या नहीं, यह प्रश्न है। उमास्वाति ने लिखा है--परस्परोपग्रहो जीवानाम्। जीवों के परस्पर आलंबन-सहयोग से काम चलता है। परस्पर सहयोग के बिना काम चलना कठिन है। संसार में तीन प्रकार के उपकारों को महत्त्वपूर्ण माना गया है। माता-पिता का उपकार, भर्ता--पालन-पोषण करने वाले का उपकार, गुरु का उपकार। माता-पिता अपनी संतान का पालन-पोषण करते हैं। प्रत्युपकार के रूप में संतान के मन में उनकी सेवा का भाव होता है। संतान उनका धार्मिक सहयोग करे तो कहना ही क्या? भर्ता द्वारा किया गया पालन-पोषण भी सांसारिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है।

गुरु ज्ञानदाता होते हैं। वे संस्कार भरते हैं, अनुशासन करते हैं। जिनसे कुछ प्राप्त हुआ, उनके नाम को छिपाएं क्यों? उपकृत के मन में अपने उपकारी के प्रति कृतघ्नता का भाव नहीं रहना चाहिए। कृतघ्न व्यक्ति हेयदृष्टि से देखे जाते हैं। कृतज्ञता जीवन का सद्गुण है।'

कच्छ जिला भाजपा के कल ही अध्यक्ष पद पर नियुक्त श्री पंकजभाई मेहता ने आचार्यवर के दर्शन किए। श्री मेहता आचार्यवर के कच्छ प्रवास पर बनी स्वागत समिति के संयोजक हैं।

सचाई को खोजने का प्रयास हो

२ अप्रेल। प्रातः लगभग दस किमी. का विहार कर आचार्यवर भुजोड़ी गांव (वर्धमान नगर) में पधारे। भुज के निकट होने तथा जैन कालोनी होने से लोग बड़ी संख्या में आचार्यवर की अगवानी में दूर तक आए। यहां आचार्यवर का प्रवास कालोनी स्थित स्थानकवासी आठकोटि (मोटीपक्ष) की वर्धमान जैन पाठशाला में हुआ। प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री ईश्वरभाई ने स्वागत भाषण किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी किसी भी देश, वेश व परिवेश में रहे, उसके मन में सचाई के प्रति सदैव सम्मान का भाव रहना चाहिए। सम्प्रदाय का महत्त्व है, किन्तु सत्य का महत्त्व व सम्मान उससे अधिक है। सचाई को खोजने का यथोचित प्रयास होना चाहिए। इस संदर्भ में रूढ़िवादी नहीं होना चाहिए। एक डॉक्टर विभिन्न प्रकार के परीक्षणों के द्वारा शरीरगत बीमारियों को खोजता है। उसी के आधार पर उसके उपचार की व्यवस्था होती है। जैन साधना पद्धति का सारपूर्ण तत्त्व है--वीतरागता। नमस्कार महामंत्र वीतरागता पर आधारित है। वह व्यक्तिपरक नहीं, गुणात्मक है। इसलिए उसे काफी अंशों में असाम्प्रदायिक कहा जा सकता है। साधना की दृष्टि से हमें वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। कुतर्क के द्वारा अपने सम्प्रदाय की श्रेष्ठता सिद्ध करने से मुक्ति नहीं होगी। मुक्ति निहित है कषायों की परिसमाप्ति में। भगवान महावीर ने कितने-कितने जन्मों तक कितनी साधना की। कई जन्मों की प्रकृष्ट साधना के बाद उन्होंने कैवल्य प्राप्त किया।

पूरे विश्व में कल १ अप्रेल को मनाए गए 'मूर्ख दिवस' पर टिप्पणी करते हुए आचार्यवर ने कहा--'व्यक्ति

किसी को फूल (मूर्ख) क्यों बनाए? जीवन को Full of joy (आनंदमय) बनाएं। फूल (Flower) की तरह कोमल बनाएं। लोग मजाक के रूप में लोग झूठ बोल देते हैं। यथासंभव भाषण व व्यवहार में यथार्थ का प्रयोग होना चाहिए। बारहव्रती श्रावक के जीवन में आचरणात्मक धर्म और पौषध आदि साधना का भी धर्म होता है। इससे उसका कितनी ही बुराइयों से बचाव हो जाता है।'

ज्ञान गोष्ठी का ज्ञानवर्धक अभिक्रम

२५ मार्च को वोंध में प्रातःकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यवर ने सुनने के संदर्भ में विशद विवेचन किया। आचार्यवर ने कहा--'सुनने से ज्ञान स्पष्ट होता है और तर्कशक्ति में वृद्धि होती है।' इस संदर्भ में प्रसंगवश आचार्यवर ने कहा--'मुनि जयकुमारजी एक दिन मेरे पास आए और कहा कि ज्ञान के विकास की दृष्टि से कोई ऐसा उपक्रम चले, जिससे वह ज्ञान प्राप्ति का हेतु तो बने ही, इसके साथ गुरुसेवा का भी अवसर मिले। हमने ऐसी ज्ञान गोष्ठी प्रारंभ की। उसमें हमने अब तक तेरापंथ से संबंधित विषय लिए।'

उल्लेखनीय है--परम श्रद्धेय आचार्यवर की पावन सन्निधि में ज्ञान गोष्ठी का अभिक्रम ६ मार्च को प्रारंभ हुआ, जो इक्कीस दिन तक अनवरत चला। आचार्यवर ने इस ज्ञान गोष्ठी के संयोजक के रूप में मुनि जयकुमारजी की नियुक्ति की। रात्रि में अर्हत वंदना के पश्चात लगभग एक श्रुत सामायिक जितने कालमान में चयनित दस विषयों पर मंत्री मुनिश्री के प्रशिक्षणमूलक वक्तव्य हुए। प्रत्येक वक्तव्य के बाद जिज्ञासा-समाधान एवं परिचर्चा का दौर चलता। परिचर्चा का क्रम कई बार काफी गहरा हो जाता। आचार्यवर का सतत मार्गदर्शन इस ज्ञान गोष्ठी का प्राण रहा। प्रशिक्षण के अनंतर सात विद्यार्थी मुनियों ने पहले चले विषयों पर वक्तव्य दिए। उन वक्तव्यों से संबद्ध प्रश्नों की बौछारों का काफी सहजता से उत्तर देने का प्रयास किया। अपेक्षानुसार आचार्यवर एवं मंत्री मुनिश्री ने भी जिज्ञासाओं को समाहित किया।

२७ मार्च को श्रुतपुरुष आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में समायोजित रात्रिकालीन संगोष्ठी में विमर्श के बाद यह निर्णीत हुआ कि कल से यह ज्ञान गोष्ठी रात्रि में न होकर दिन में १.४० बजे से २.१० बजे तक चले। यह गोष्ठी रविवार व अपेक्षानुसार अन्य अवकाश के दिनों के अतिरिक्त १६ जुलाई २०१३ तक नियमित चले। इस गोष्ठी का आधार तीसरा अंग सूत्र 'ठाणं' रहेगा। वाचन के साथ प्रश्नोत्तर का दौर भी चल सकेगा। इस निर्णय के साथ २८ मार्च को लगभग पन्द्रह मिनट के लिए वाचन का प्रारंभ हो गया। उसके बाद प्रतिमाह होने वाली आचार्य तुलसी जन्मशताब्दी के संदर्भ में निर्मित व्यक्तित्व विकास प्रकल्प परिषद की मीटिंग हुई।

स्मृति-संबल

- तिरुकलीकुन्द्रम (तमिलनाडु) निवासी श्री कमलकुमार दूगड़ (सुपुत्र-श्री चंपालालजी दूगड़) का चवालीस वर्ष की आयु में देहान्त हो गया। नियमित सामायिक और स्वाध्याय का उनका क्रम था। उन्होंने वेदना की स्थिति में भी सहनशीलता का परिचय दिया। उनका मनोबल दृढ़ था। देव, गुरु, धर्म के प्रति गहरी आस्था थी। उनके पिता चंपालालजी वर्षों से ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक हैं। माता शोभादेवी आस्थाशील श्राविका है। पत्नी सुनीता दूगड़ ने वियोग की स्थिति में बड़े धैर्य व मनोबल का परिचय दिया।
- बोरियापुर निवासी, उधना-सूरत प्रवासी श्री डालचन्द बाफणा (सुपुत्र-स्व.प्यारचन्दजी बाफणा) का देहावसान हो गया। वे मिलनसार, व्यवहारकुशल व धार्मिक अभिरुचि के श्रावक थे। उधना तेरापंथ भवन के निर्माण के बाद नियमित धर्मोपासना करते थे। प्रत्येक माह के प्रथम रविवार को चार भाइयों के पूरे परिवार में सामूहिक सामायिक अनुष्ठान चलता रहा, जिसमें लगभग पचास सामायिक संपन्न होती

है। उनके अनुज लक्ष्मीलालजी उधना सभा के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं। वे अभी भी विभिन्न रूपों में संघ और समाज सेवा हेतु सक्रिय हैं। पूरा परिवार संस्कारी है।

- गंगाशहर निवासी श्री केसरीचन्दजी गोलछा का निधन हो गया। वे साध्वी सुषमाश्रीजी के संसारपक्षीय पिता और साध्वी संवेगप्रभाजी के संसारपक्षीय मामा थे। उन्होंने अपने जीवन में चौदह वर्षीतप संपन्न किए। इसके अतिरिक्त उपवास, बेले आदि की तपस्याएं चलती रहती थीं। रात्रि चौविहार, प्रातः पोरसी, सामायिक, संवत्सरी अष्टप्रहरी पौषध आदि का क्रम रहा। संघ और संघपति के प्रति उनके मन में गहरी निष्ठा थी। साधु-साध्वियों की मार्ग सेवा और पात्रदान बड़े मनोयोग से करते थे। जैन संस्कार विधि के अच्छे जानकार थे और क्षेत्र में इस दृष्टि से अपना दायित्व निभाते थे। गंगाशहर गायक मंडली के वे प्रमुख सदस्य थे। रामचरितमानस चन्द आदि पुराने आख्यानों की रागों के अच्छे जानकार व गायक थे।
- दौलतगढ़ निवासी बारडोली प्रवासी श्री शोभालाल बड़ोला का देहावसान हो गया। पांच सामायिक व रात्रि भोजन परिहार उनका नित्यक्रम था। उन्होंने कई तपस्याएं कीं। साधु-साध्वियों की मार्गवर्ती सेवा में रस लेते थे। पिछले बावन वर्षों से प्रतिवर्ष गुरुदर्शन एवं सेवा का लाभ उठाते रहे। दौलतगढ़ व बारडोली के सभा भवनों के निर्माण में उनकी प्रशस्त भूमिका रही। उनकी धर्मपत्नी शान्तादेवी तपस्विनी, स्वाध्यायी तथा महिला मंडल व ज्ञानशाला से जुड़ी श्राविका है। वियोग के क्षणों में किसी भी रूढ़ि को प्रश्रय न देकर सामायिक व धर्मध्यान में संलग्न रही। उनके सुपुत्र विजय, जयेश आदि संस्कारी हैं।
- केलवा निवासी श्री भेरूलाल बोहरा का देहावसान हो गया। वे श्रद्धाशील श्रावक थे। वर्षों तक स्थानीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दीं। आचार्यश्री महाश्रमण के केलवा चतुर्मास में सेवा-उपासना का अच्छा लाभ लिया। केलवा का बोहरा परिवार संघनिष्ठ और जिम्मेदार परिवार है।
- लाडनूं निवासी अहमदाबाद प्रवासी श्री शुभकरण सुराणा का देहावसान हो गया। श्री सुराणा विनम्र, श्रद्धाशील, सेवाभावी व संघ-संघपति के प्रति समर्पित श्रावक थे। वे अणुव्रत महासमिति के महामंत्री व 'अणुव्रत पाक्षिक' के संपादक रहे। अणुव्रत व प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में उन्होंने बहुत काम किया। वे कोबा(अहमदाबाद) स्थित प्रेक्षा विश्वभारती के संस्थापक सदस्यों में थे। अनेकान्त भारती प्रकाशन के माध्यम से आचार्य महाप्रज्ञजी की शताधिक पुस्तकों को गुजराती भाषा में अनूदित कर प्रकाशित किया। उनकी धर्मपत्नी स्व. श्रीमती कान्ता सुराणा प्रेक्षाध्यान की साधिका व प्रशिक्षिका थीं। सुराणा परिवार आस्थाशील व सेवाभावी परिवार है। अन्तिम समय में उनके सुपुत्र प्रवीण व संतोष ने कई त्याग-प्रत्याख्यान करवाए।
- सरदारशहर निवासी जयपुर प्रवासी श्रीमती विमलादेवी भंसाली (धर्मपत्नी-श्री चन्दनमलजी भंसाली का संथारे में स्वर्गवास हो गया। सोलह दिन की तपस्या, इक्कीस दिन का तिविहार व छह दिनों का चौविहार संथारा आया। आचार्यवर की अनुज्ञा से साध्वी रामकुमारीजी (सरदारशहर) की सहवर्ती साध्वियों से संथारे का प्रत्याख्यान किया। पूज्य आचार्यप्रवर व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के सन्देशों ने बहिन को आत्मबल व प्रेरणा प्रदान की। वहां प्रवासित साध्वियों का भी अच्छा आध्यात्मिक सहयोग मिला। उनके संथारे से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना हुई। संथारे के उपलक्ष्य में अनेक लोगों ने विविध त्याग-प्रत्याख्यान किए।

भुज में दीक्षा समारोह संपन्न

३ अप्रेल को भुज में दीक्षा समारोह जनता की विशाल उपस्थिति में सानंद संपन्न हो गया। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुमुक्षु ख्याति (भुज) को समणी दीक्षा प्रदान की। नवदीक्षित समणी का नाम **समणी ख्यातिप्रज्ञा** रखा गया है।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 06-04-2013 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

आचार्य महाश्रमण वर्धापना ग्रन्थ हेतु रचनाएं आमंत्रित

आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव के संदर्भ में परम पूज्यवर की अभ्यर्थना में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा वर्धापना ग्रन्थ का प्रकाशन किया जा रहा है। इस हेतु साधु-साध्वियों और समणश्रेणी की रचनाएं (आलेख, संस्मरण, काव्य आदि) लगभग २०० शब्दों में प्रेषित की जा सकती हैं। चयनित रचनाएं अथवा उनके चयनित अंश संपादनपूर्वक ग्रन्थ में प्रकाशित किए जा सकेंगे। रचनाएं गुरुकुलवास में संचालित तेरापंथी महासभा के शिविर कार्यालय अथवा campoffice13@gmail.com पर १३ मई २०१३ तक प्राप्त हो जाएं, ऐसी अपेक्षा है। इस संदर्भ में अधिक जानकारी हेतु मोबाईल ०८२६०६२६७६७ पर सम्पर्क किया जा सकता है।

प्रेक्षा पुरस्कार-२०१३ की घोषणा

अध्यात्म साधना एवं प्रेक्षाध्यान के क्षेत्र में कार्यरत साधक को मोहनलाल कठोतिया सेवा कोष द्वारा दिया जाने वाला 'प्रेक्षा पुरस्कार' श्री राजेन्द्रकुमार मोदी (इन्दोर) को दिया जाएगा।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी चौपड़ा (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री अमृतलालजी चौपड़ा, पचपदरासिटी) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र भंवरलाल, महेन्द्रकुमार, पवनकुमार, महेशकुमार, प्रवीणकुमार, सुपौत्र राजकुमार, दिनेश, मुकेश, पुष्पराज, शैलेष, मोहजीत व प्रिंस चौपड़ा द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व.श्रीमती पुष्पादेवी गादिया (पुत्रवधू-श्री अमरचन्दजी गादिया, धर्मपत्नी-श्री गौतमचन्दजी गादिया, पाली-सूरत) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू कमलेश-पूर्णिमा, नितेश-शिल्पा, पिंकेश-श्वेता, सुपौत्र कार्तिक, श्लोक, अर्हम, सुपौत्री दीया व आन्या द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती कमलाबाई बाफना (धर्मपत्नी-श्री चन्दनमलजी बाफना, लाम्बोड़ी-घाटकोपर मुम्बई) की पुण्यस्मृति में पुखराज, अर्जुनलाल, हस्तीमल, सोहनलाल, बसन्तीलाल, पारसमल, भगवतीलाल, सुपुत्र व पुत्रवधू देवीलाल-हंसा, सुपौत्र ध्रुव, सुपौत्री खुशी व टीशा बाफना द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती केसरबाई पालरेचा (धर्मपत्नी-श्री बापूलालजी पालरेचा, झकनावदा) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र मनोहरलाल, नरेन्द्रकुमार, दिलीपकुमार, अभयकुमार, प्रदीपकुमार पालरेचा परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती सुन्दरदेवी (धर्मपत्नी-अणुव्रतसेवी श्री जसराज जैन, सायरा-सूरत) की १३वीं पुण्यतिथि एवं अणुव्रतसेवी श्री जसराज मेहता जैन के १० अप्रेल को ८३वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर उनके सुपुत्र जीतमल, जोधराज, रमेश, विमल, हरीश, सुपौत्र राजू, भावेश, भारत, धर्मेश, किरण, चेतन, हितेश, रवि, अनुज, जय द्वारा प्रदत्त।

सम्पर्क के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री शान्तिलाल के. जैन
महावीर जनरल स्टोर, सराफा बाजार, पो. भुज-कच्छ-३७० ००१ (गुजरात)
मोबाइल नं. ०७६९८६५०४१० (गुजरात प्रवास में), ०६३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**